

# छाटी

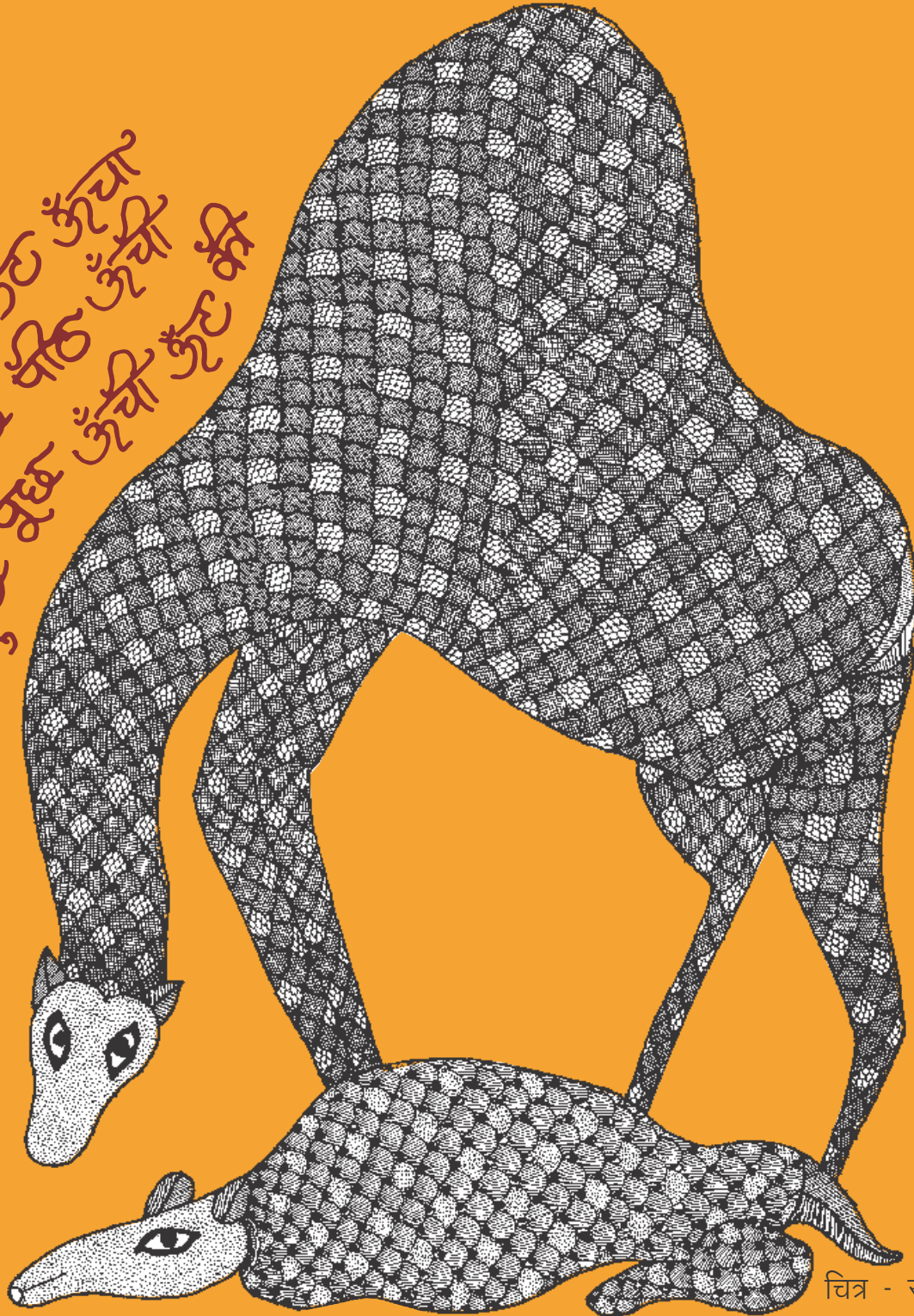
अंक 5 वर्ष 1

दिसम्बर-जनवरी, 2017

मूल्य ₹50



कुछ अंड ऊँचा  
कुछ पीछे ऊँचा  
कुछ पूँछ ऊँचा अंड की





सुशील शुक्ल

चित्र - प्रोइती राय

मैं तब तीसरी कक्षा में पढ़ती थी। एक दिन हमें टीचर ने बताया कि पृथ्वी घूमती है। मुझे यह सुनकर बुरा लगा। अगर टीचर को यह बात पहले से पता थी तो हमें स्कूल के पहले दिन ही क्यों नहीं बता दिया! हम सब भी तो पृथ्वी पर ही रह रहे हैं।





हमारे घर पर एक टूटी कुर्सी थी।  
जब हमारे घर कोई आता था तो  
हम पहले ही बता देते थे, ज़रा  
सँभल कर कुर्सी लुढ़क सकती है।



हम इतनी छोटी-सी बात नहीं छिपाते थे। और टीचर ने इतनी बड़ी बात छिपा ली थी।





हम पृथ्वी पर ही खड़े होते थे। पृथ्वी पर ही बैठते थे। पृथ्वी पर ही सोते थे।  
हमें कभी पृथ्वी घूमती हुई नहीं दिखी थी।

मैं सोचती कि पृथ्वी घूमती है तो क्या मेरा  
घर भी घूमता होगा! मैं बाल बनाती हूँ वो  
कंघी भी घूमती होगी! मेरा ब्रुश भी! और  
मेरा चश्मा! मेरा बस्ता!

कोई बाल्टी को पानी से लबालब भर देता।  
मैं जाती और उसका थोड़ा-सा पानी एक  
दूसरी बाल्टी में डाल देती। मुझे लगता कि  
पृथ्वी के घूमने से बाल्टी का पानी छलक  
सकता है। पानी नीचे गिरेगा तो बेचारी  
पृथ्वी ही गीली होगी। प्यारी

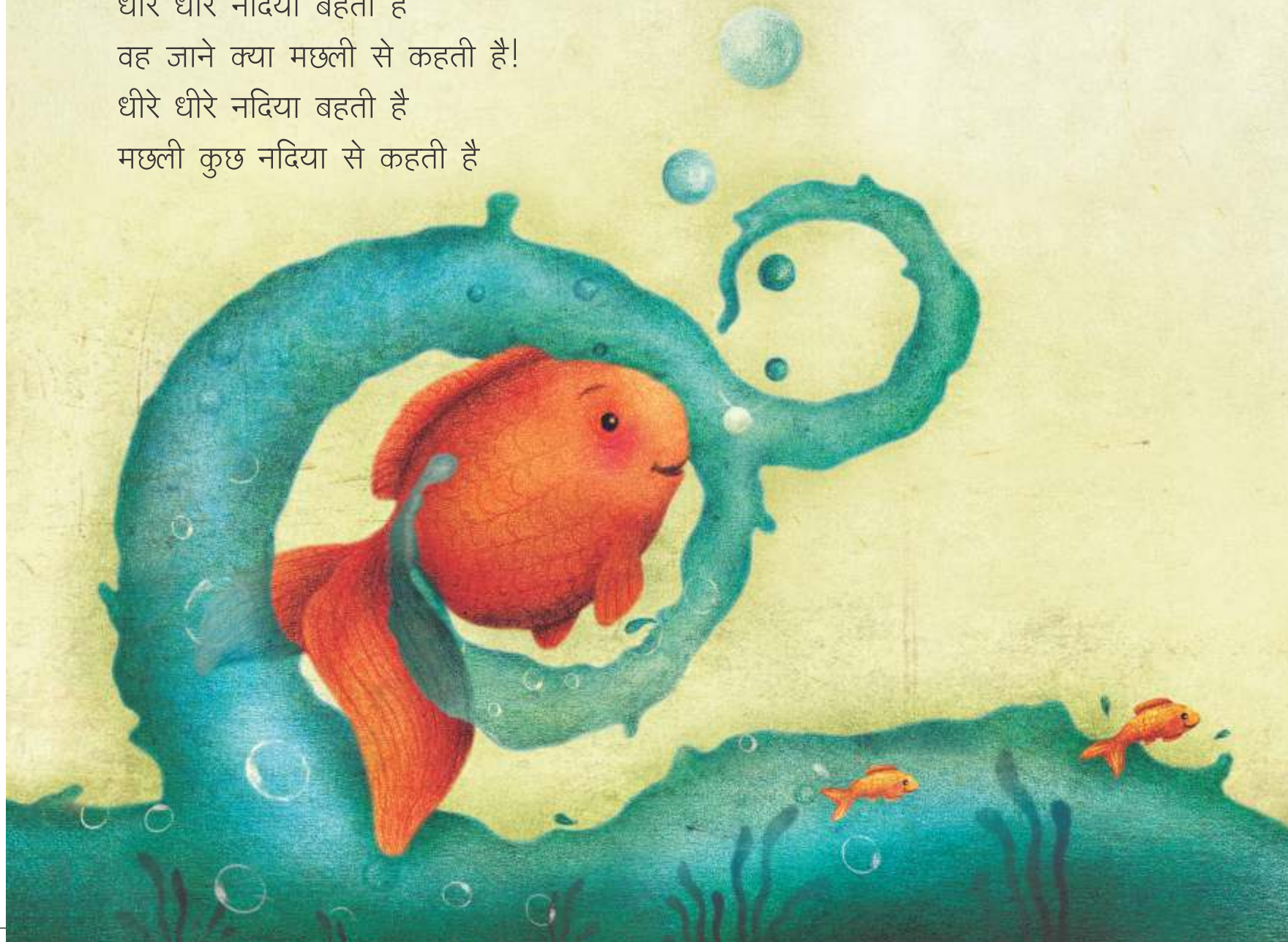




# धीरे धीरे नदिया बहती है

यायावर

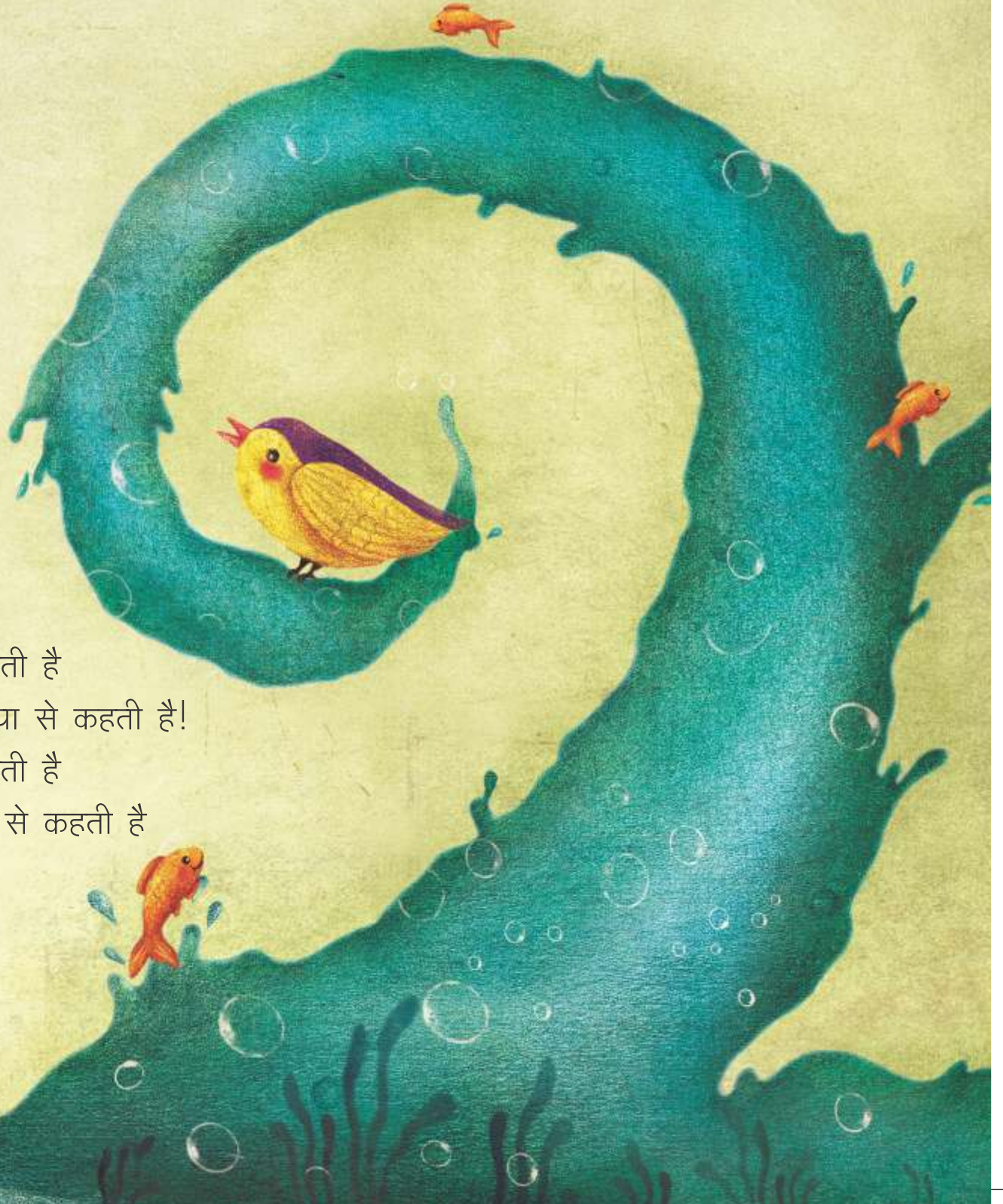
धीरे धीरे नदिया बहती है  
वह जाने क्या मछली से कहती है!  
धीरे धीरे नदिया बहती है  
मछली कुछ नदिया से कहती है





धीरे धीरे नदिया बहती है  
वह जाने क्या चिड़िया से कहती है!  
धीरे धीरे नदिया बहती है  
चिड़िया कुछ नदिया से कहती है

चित्र - मौसमे एतेबरज़दे





धीरे धीरे नदिया बहती है  
मुझे पता है बादल से वह क्या कहती है  
धीरे धीरे नदिया बहती है  
तुम्हें पता है बादल से वह क्या कहती है?

प्युटी





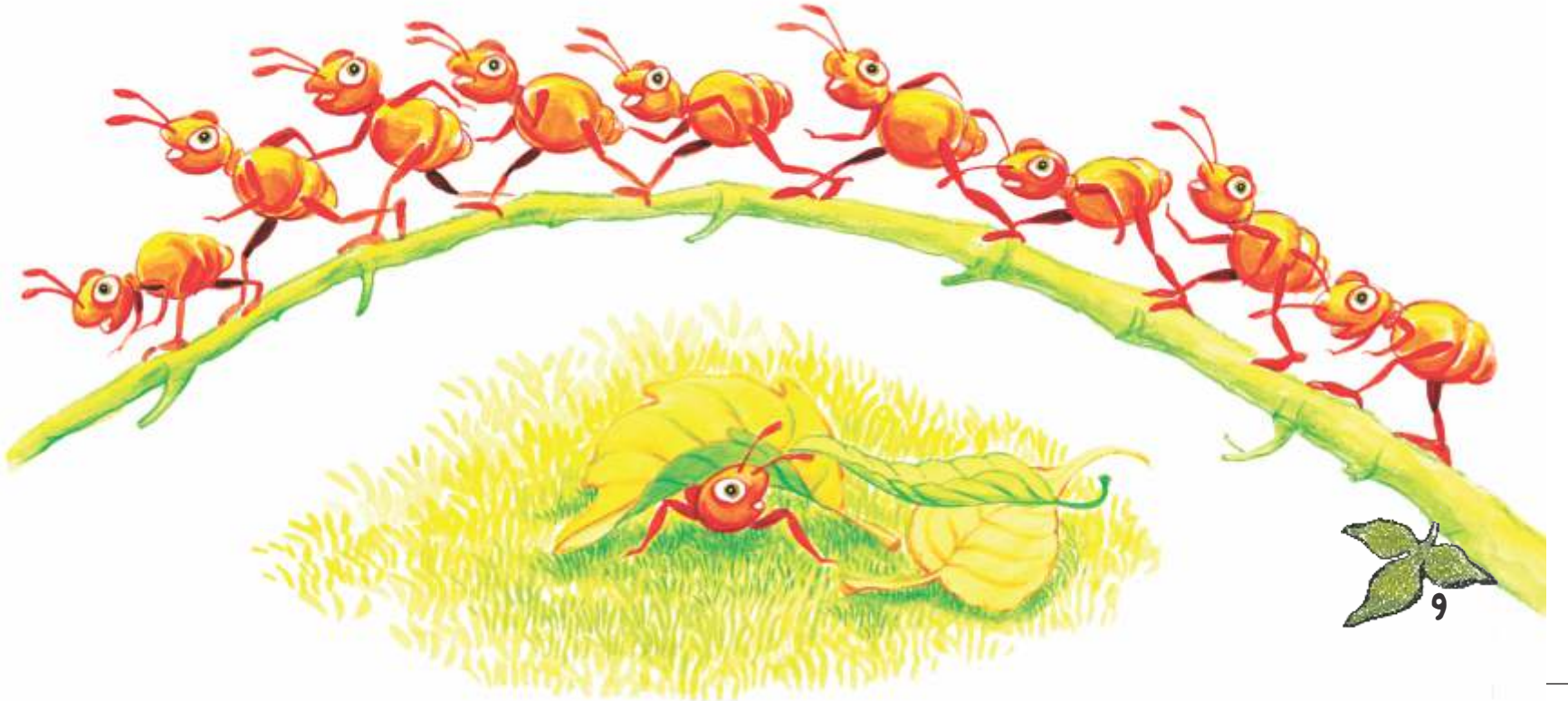
# अकेली चींटी

चन्दन यादव

चलती हैं?” सोचते-सोचते वह कभी पीछे रह जाती। कभी लाइन से बाहर हो जाती। तब कोई दूसरी चींटी धक्का देकर उसे वापिस लाइन में पहुँचा देती।

**वह** जब से अण्डे से निकली थी, तब से हमेशा लाइन में ही चली थी। वो हमेशा सोचती, “चींटियाँ हमेशा लाइन में क्यों

एक दिन चींटी ने तय कर लिया कि वो लाइन में नहीं चलेगी। वो चुपके से लाइन से दूर हुई और अकेली चल पड़ी।





और अकेली चल पड़ी। रास्ते में उसे एक मरा हुआ तिलचट्टा दिखा। यह शानदार भोजन है पर चींटी उसे खाने के लिए नहीं रुकी।

चलती रही। चलती रही। चलती रही। गर्मियों के दिन थे। रास्ते में सूखे पत्ते बिखरे हुए थे। उसे लाइन में चलती कई चींटियाँ दिखीं।



वह उनमें शामिल नहीं हुई। प्यास से उसका गला सूखने लगा था। भूख भी लग रही थी। अचानक सूखे पत्तों के टूटने की आवाज़ सुनाई देने लगी। यह आवाज़ लगातार पास आती जा रही थी।





तभी हिरणों का एक झुण्ड चींटी ने अपनी तरफ आते देखा। उसने डर से आँखें बन्द कर लीं। थोड़ी देर बाद उसने अपनी आँखें खोलीं। वह सलामत थी।

अब चींटी आगे चली। चलती रही। चलती रही। प्यास से उसका गला सूख रहा था। भूख भी लगी थी। अचानक हवाएँ चलने


लगीं। चींटी के लिए ज़मीन पर अपने पाँव जमाए रखना मुश्किल होने लगा। जब चींटी उड़ी तो पता चला, वो ज़मीन पर नहीं एक सूखे पत्ते पर थी। पत्ता बहुत देर तक हवा में इधर-उधर उड़ता रहा। चींटी किसी तरह उससे चिपकी रही। जब हवा थमी तो पत्ता चींटी को लिए हुए ज़मीन पर गिरा। इस बार भी उसकी जान सलामत थी।







चींटी ने देखा, वो एक पोखर के पास थी। उसने पेटभर पानी पिया। वहीं उसे बेर भी मिल गए। चींटी ने भरपेट खाना खाया और आगे चल दी।

तुमने कभी कोई अकेली चींटी देखी है? जब देखोगे तो पहचान लोगे ना कि ये वही है जो लाइन में चलना नहीं चाहती है। 



एक ऊपर के दाँत की दोस्ती नीचे वाले दाँत से हो गई थी। वे हमेशा मिलने का मौका देखते रहते थे।

जीभ उन्हें हमेशा टोकती रहती थी। वे हमेशा कहते, “यार चल, खाने पर मिलेंगे।”



# मूँगफली

विनता विश्वनाथन

ये मौसम मूँगफली का है। मूँगफली इस मौसम में हर कहीं दिख जाती है। सादी, उबली हुई या भुनी हुई। उसे तोड़-तोड़कर खाने में कितना मज़ा आता है! चटोके की आवाज़ के साथ दो-तीन गुलाबी दाने निकल पड़ते हैं। क्या तुम्हें मूँगफली को आसानी से तोड़ने की कोई ट्रिक आती है?

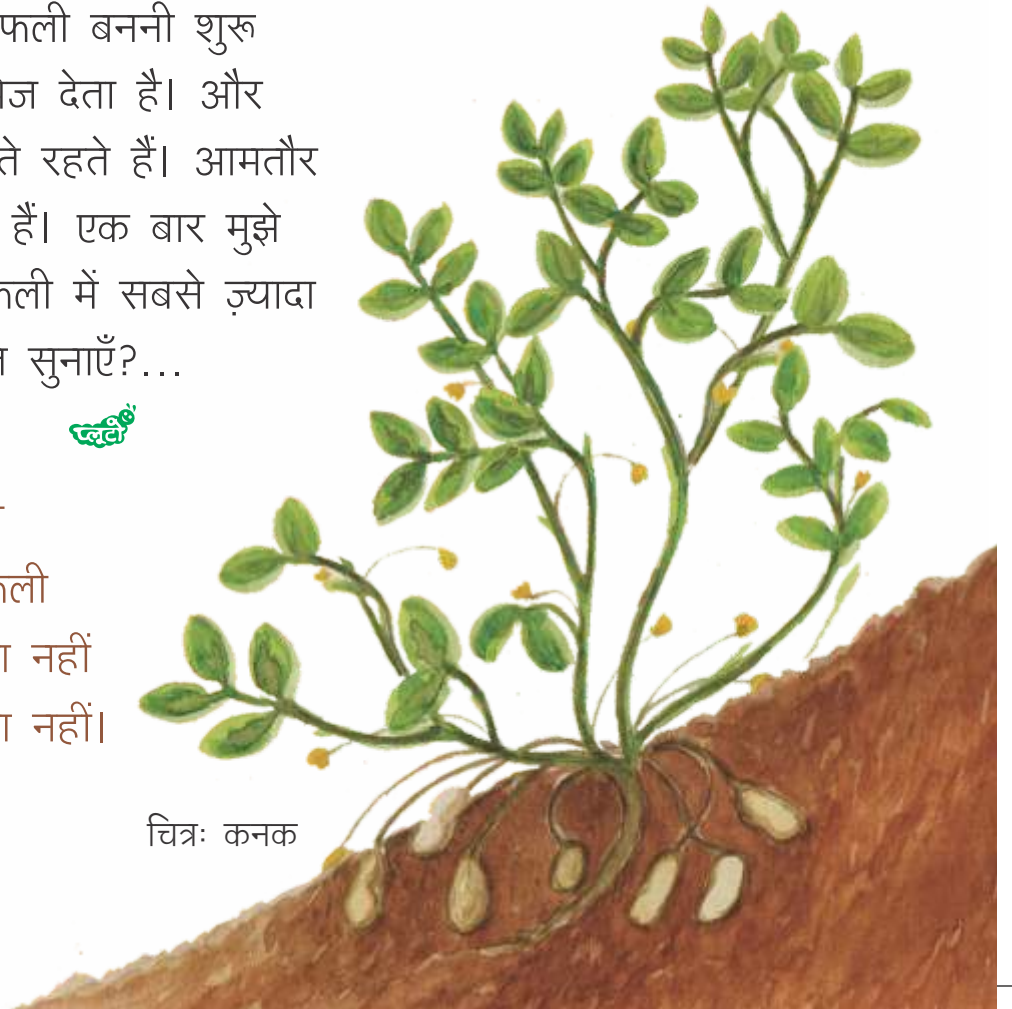


मूँगफली शर्मीला फल है। फूलों से जब फली बननी शुरू होती है तो पौधा उन्हें ज़मीन के नीचे भेज देता है। और वहाँ गुप्प अँधेरे में मूँगफली के दाने पकते रहते हैं। आमतौर पर एक फली में दो से चार दाने मिलते हैं। एक बार मुझे एक फली में सात दाने मिले। तुम्हें मूँगफली में सबसे ज़्यादा कितने दाने मिले? मूँगफली का एक गीत सुनाएँ?...



नाना नाना भूख लगी  
खा लो बिटिया मूँगफली  
मूँगफली में दाना नहीं  
हम तुम्हारे नाना नहीं।

चित्र: कनक





# बादल का घोड़ा

अनवारे इस्लाम



प्यास लगे  
ज़्यादा  
पानी है  
थोड़ा

रुका नहीं  
भाग गया  
बादल का  
घोड़ा

प्यारी

चित्र: सोनाली बिस्वास







एक दिन पिन्नी को स्कूल में खेलते समय एक विचित्र-सा बीज मिला। तो उसने बीज मिन्नी को दिखाया। इस डर से कि बीज ज़हरीला भी हो सकता है दोनों ने तय किया कि इसे कहीं गाड़ देते हैं।



मिन्नी और पिन्नी ने छोटा-सा गड्ढा खोदकर वह बीज गाड़ दिया।



अगली सुबह लट्टू ने आकर बताया कि जहाँ बीज गड़ा था वहाँ एक विचित्र-सा सुन्दर पौधा उग आया है।

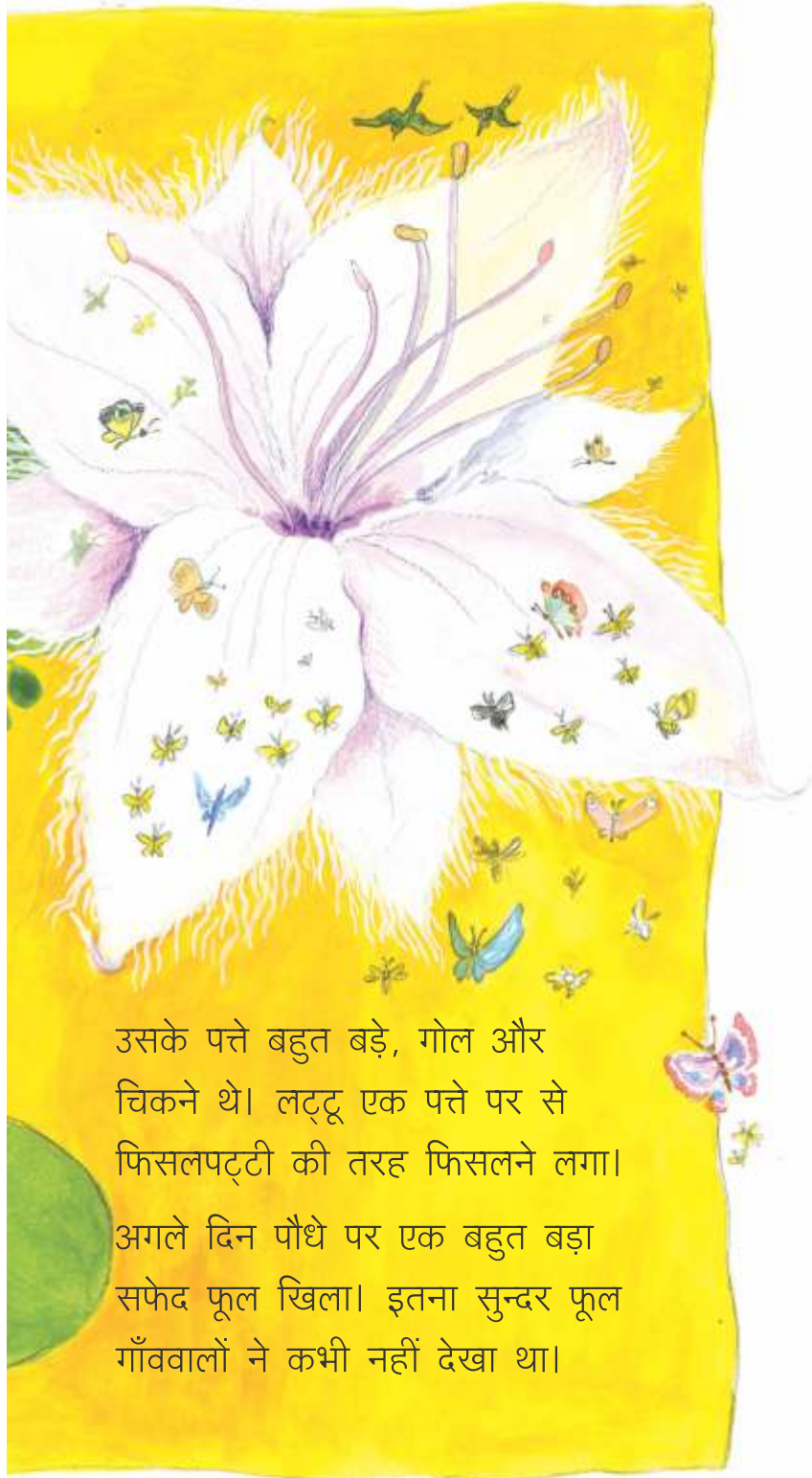


मिन्नी पिन्नी विचित्र पौधा देखने भागे। उनके साथ कुछ और बच्चे भी लग लिए।

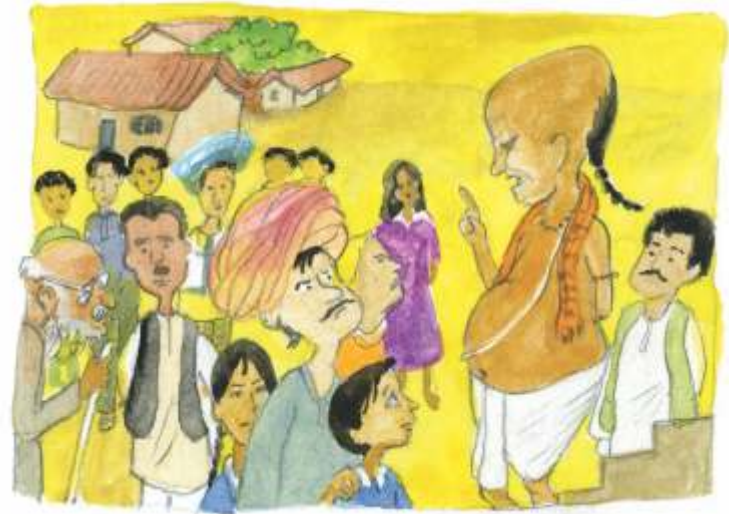


चित्र: अतनु राय





शाम तक पौधा बढ़कर मिन्नी और पिन्नी के कन्धों तक आ गया। उसमें से खूब खुशबू आ रही थी। खबर फैली तो गाँववाले भी उसे देखने आने लगे।



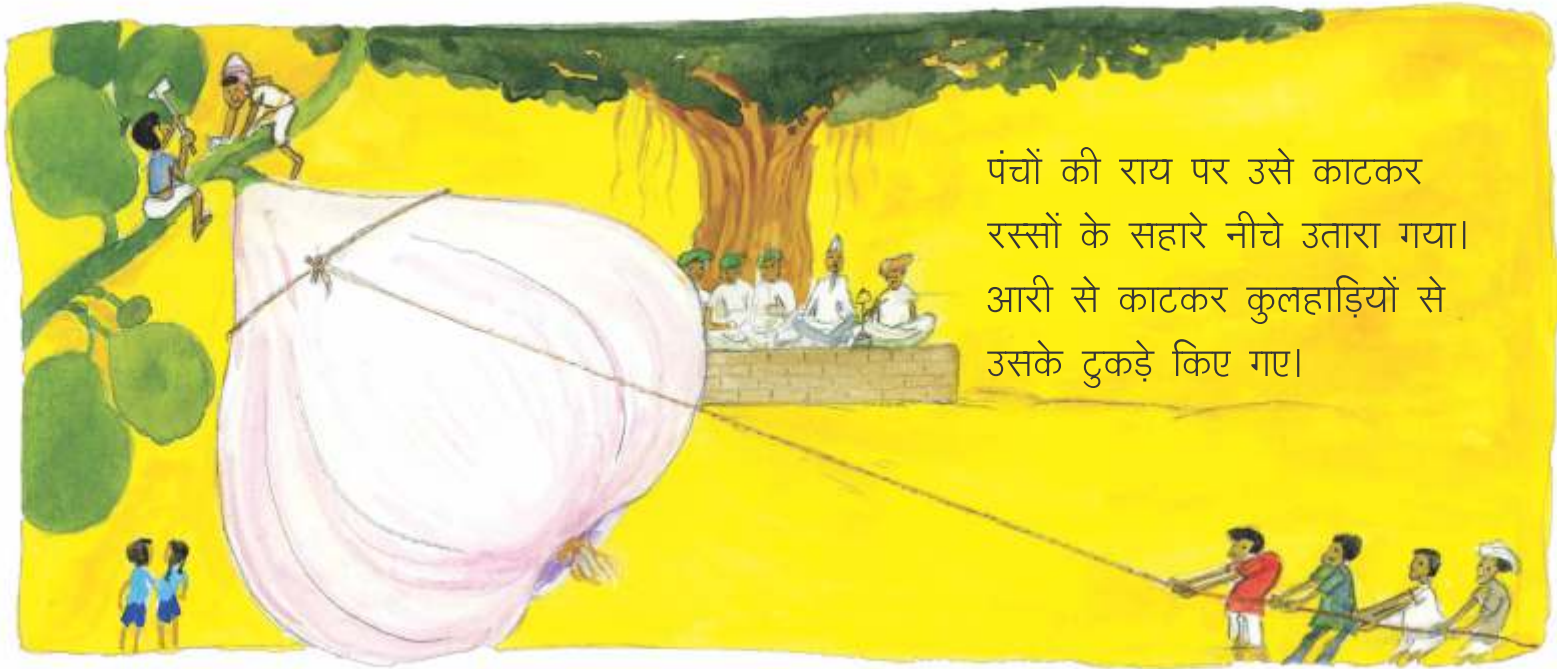
गाँव के पुजारी ने कहा, “यह अनहोनी का संकेत है। गाँव पर कोई मुसीबत आनेवाली है। इसे कटवा दो। या कम से कम बच्चों को इससे दूर रखो।”

अगले दिन फूल मुरझा गया। तितलियाँ गायब हो गईं। सब उदास हो गए।



लेकिन फूल की जगह एक सफेद फल गुम्बद जितना बड़ा हो गया।





पंचों की राय पर उसे काटकर  
रस्सों के सहारे नीचे उतारा गया।  
आरी से काटकर कुलहाड़ियों से  
उसके टुकड़े किए गए।

एक बड़े कढ़ाव में विचित्र फल की खीर पकाई गई। और उससे सारे गाँव की दावत की गई।



ऐसी दावत गाँव में पहले कभी नहीं हुई थी। बुजुर्गों को वह विचित्र दावत अभी तक याद है।





तुम्हारा पन्ना




- पार्थ अग्रवाल, चौथी, डीपीएस, पटना



- नन्दिनी राय, चौथी, डीपीएस पटना



A vibrant illustration on a red background. A large, swirling pink shape dominates the center. A brown dog with white patches is leaping from the top right. A striped cat is jumping from the left, its mouth open. A small brown mouse is at the bottom. In the top left, there are small black flies. The text is placed within the pink swirl.

वह देखो वह आता चूहा  
आँखों को चमकाता चूहा  
मूँछों में मुस्काता चूहा  
लम्बी पूँछ हिलाता चूहा।  
मक्खन रोटी खाता चूहा  
बिल्ली से डर जाता चूहा।

निरंकार देव सेवक की इस कविता पर  
सरनानी कौर, चौथी-डी, डीपीएस, लुधियाना ने अपनी कविता बनाई।

वह देखो वो आती बिल्ली  
आँखों को चमकाती बिल्ली  
मूँछों में मुस्काती बिल्ली  
लम्बी पूँछ हिलाती बिल्ली  
दूध-पनीर खाती बिल्ली  
कुत्ते से डर जाती बिल्ली

तुम इस कविता  
में किस जानवर  
को रखना  
चाहोगे?

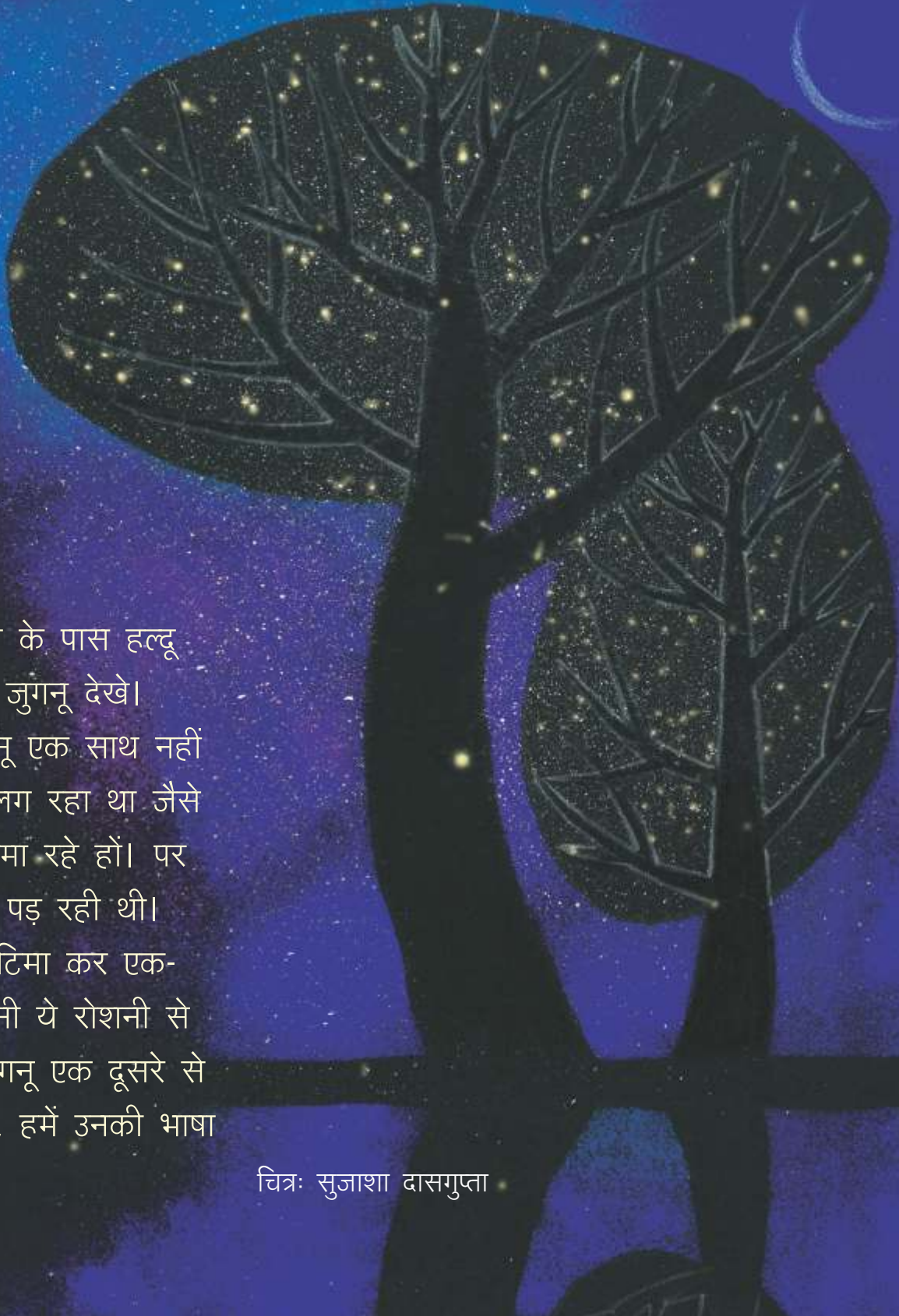
# जुगनू

विनता विश्वनाथन



एक बार मेरी एक दोस्त ने मुझे जुगनू दिखाया। जुगनू एक माचिस में कैद था। हम दोनों एक अंधेरे कमरे में थे। जुगनू हर थोड़े लम्हों बाद टिमटिमाता। फिर हमने कमरे की लाइट जला ली। जुगनू एक आम-सा कीड़ा दिखता था। पर उसके पेट की पट्टियों में एक टिमटिमाहट रहती थी।





एक बार हमने एक नाले के पास हल्दू  
और जामुन के पेड़ों पर जुगनू देखे।  
हज़ारों जुगनू। सब जुगनू एक साथ नहीं  
टिमटिमा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे  
वे किसी धुन पर टिमटिमा रहे हों। पर  
यह धुन उन्हें ही सुनाई पड़ रही थी।  
कहते हैं कि जुगनू टिमटिमा कर एक-  
दूसरे को बुलाते हैं। यानी ये रोशनी से  
कोई संदेश देते हैं। जुगनू एक दूसरे से  
क्या बोलते होंगे? काश, हमें उनकी भाषा  
समझ आती! 🌟

चित्र: सुजाशा दासगुप्ता



# सुम्मी तू कहाँ चली?

विशाखा चिनचानी

सुम्मी तू कहाँ चली?  
कपड़े सिलवाने  
कैसे कपड़े?  
लहंगा चोली  
कैसा लहंगा?  
कैसी चोली?  
सुनहरा लहंगा  
सुनहरी चोली  
कैसा सुनहरा?  
सूरज जैसा  
कैसा सूरज?  
डूबता सूरज  
कैसे डूबता?  
धीरे धीरे  
कैसे धीरे?  
मैं चलूँ वैसे  
कैसे चले तू?  
ठुम्मक ठुम्मक



चित्र: मिष्टुनी चौधुरी



# तेलगावा





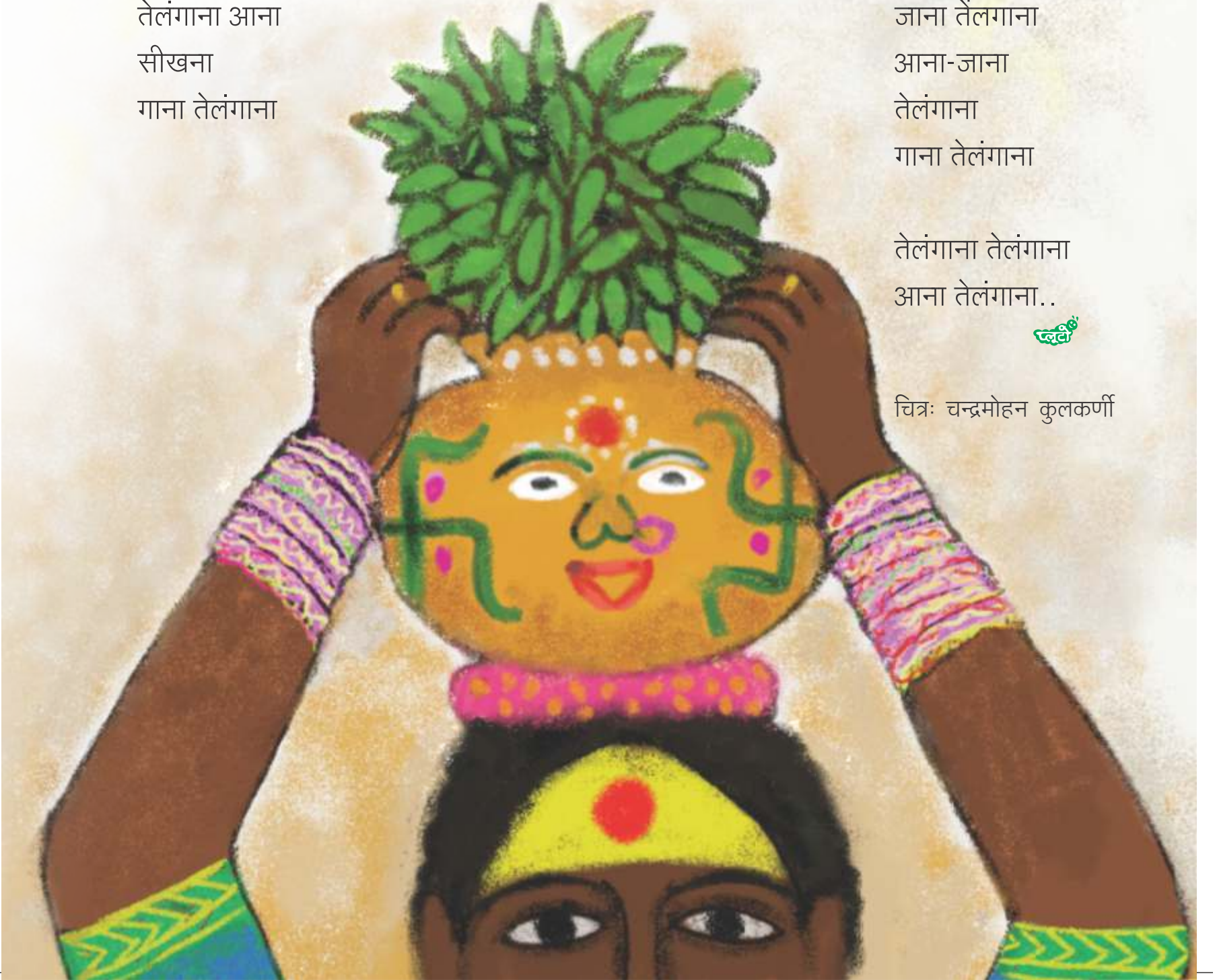
तेलंगाना तेलंगाना  
आना तेलंगाना  
तेलंगाना आना  
सीखना  
गाना तेलंगाना

आना सीखना  
तेलंगाना  
जाना तेलंगाना  
आना-जाना  
तेलंगाना  
गाना तेलंगाना

तेलंगाना तेलंगाना  
आना तेलंगाना..



चित्र: चन्द्रमोहन कुलकर्णी





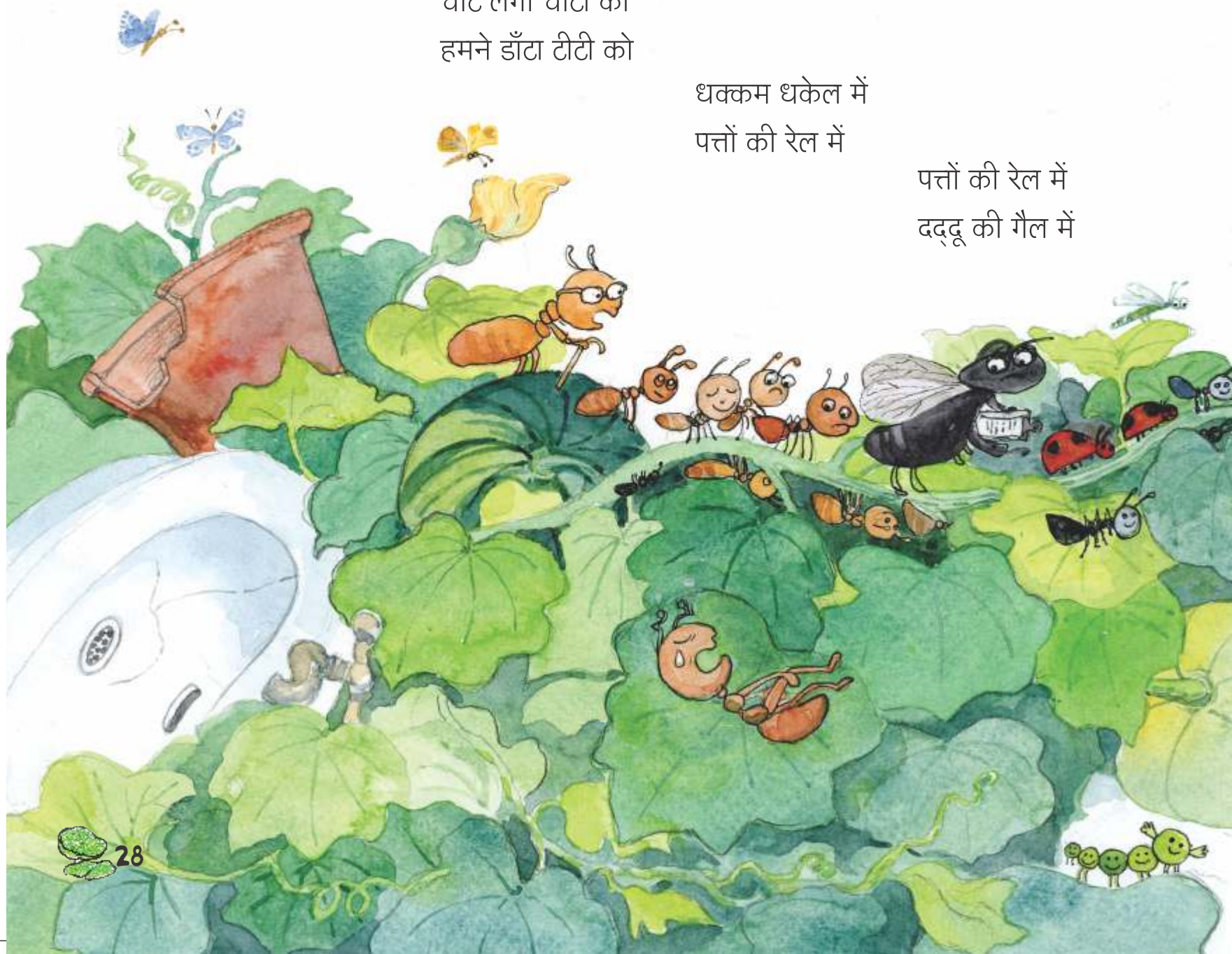
# चोट लगी को...



चोट लगी चींटी को  
हमने डाँटा टीटी को

धक्कम धकेल में  
पत्तों की रेल में

पत्तों की रेल में  
दद्दू की गैल में





ददू की गैल में  
कदू की बेल में

चींटी को चोट लगी  
चोट लगी चींटी को

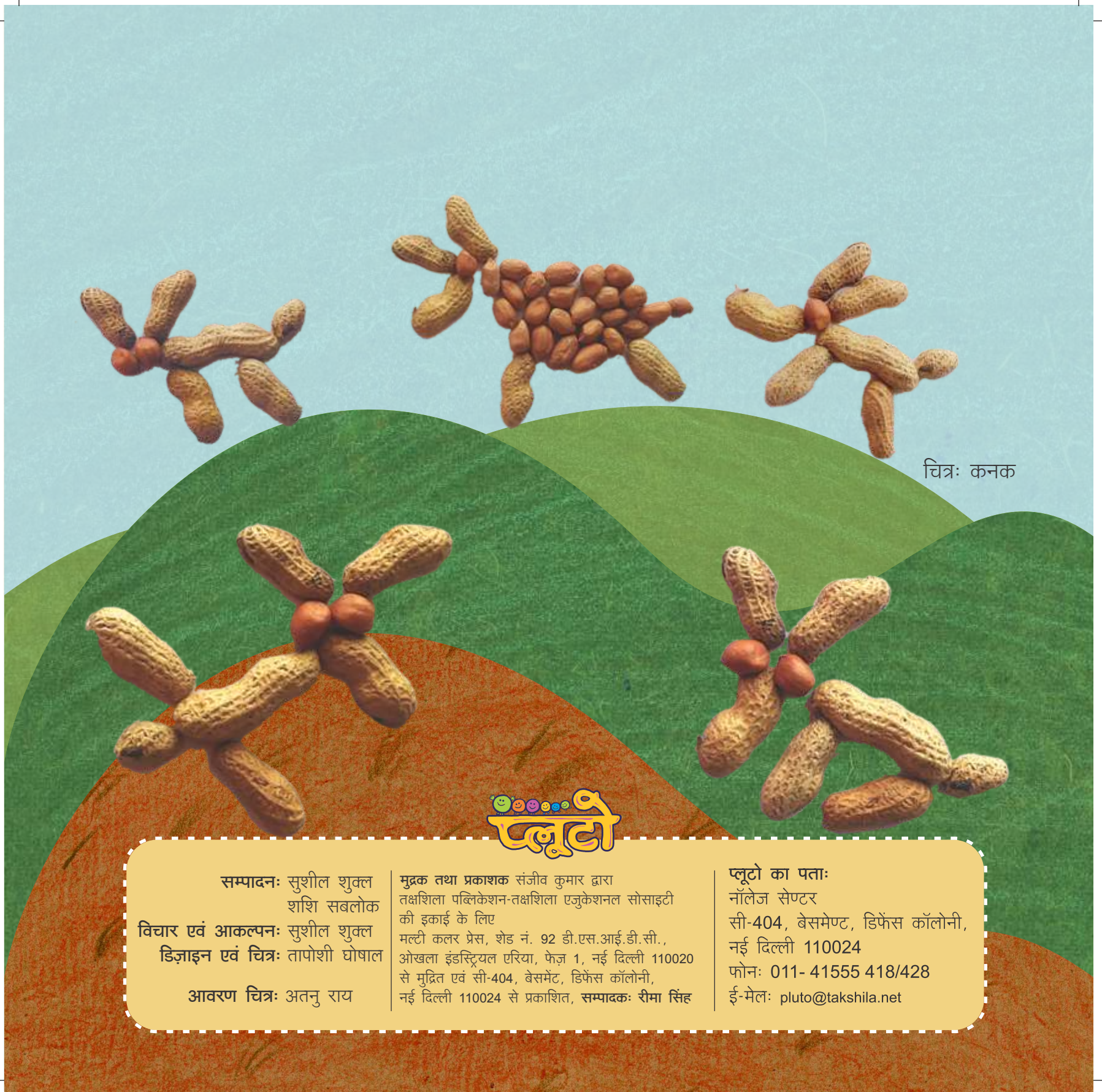
कदू की बेल में  
ददू की गैल में  
पत्तों की रेल में  
धक्कम धकेल में  
चोट लगी चींटी को...

चित्र: तापोशी घोषाल

ज्वाली







चित्र: कनक

## प्लूटो

सम्पादन: सुशील शुक्ल  
शशि सबलोक  
विचार एवं आकल्पन: सुशील शुक्ल  
डिज़ाइन एवं चित्र: तापोशी घोषाल

आवरण चित्र: अतनु राय

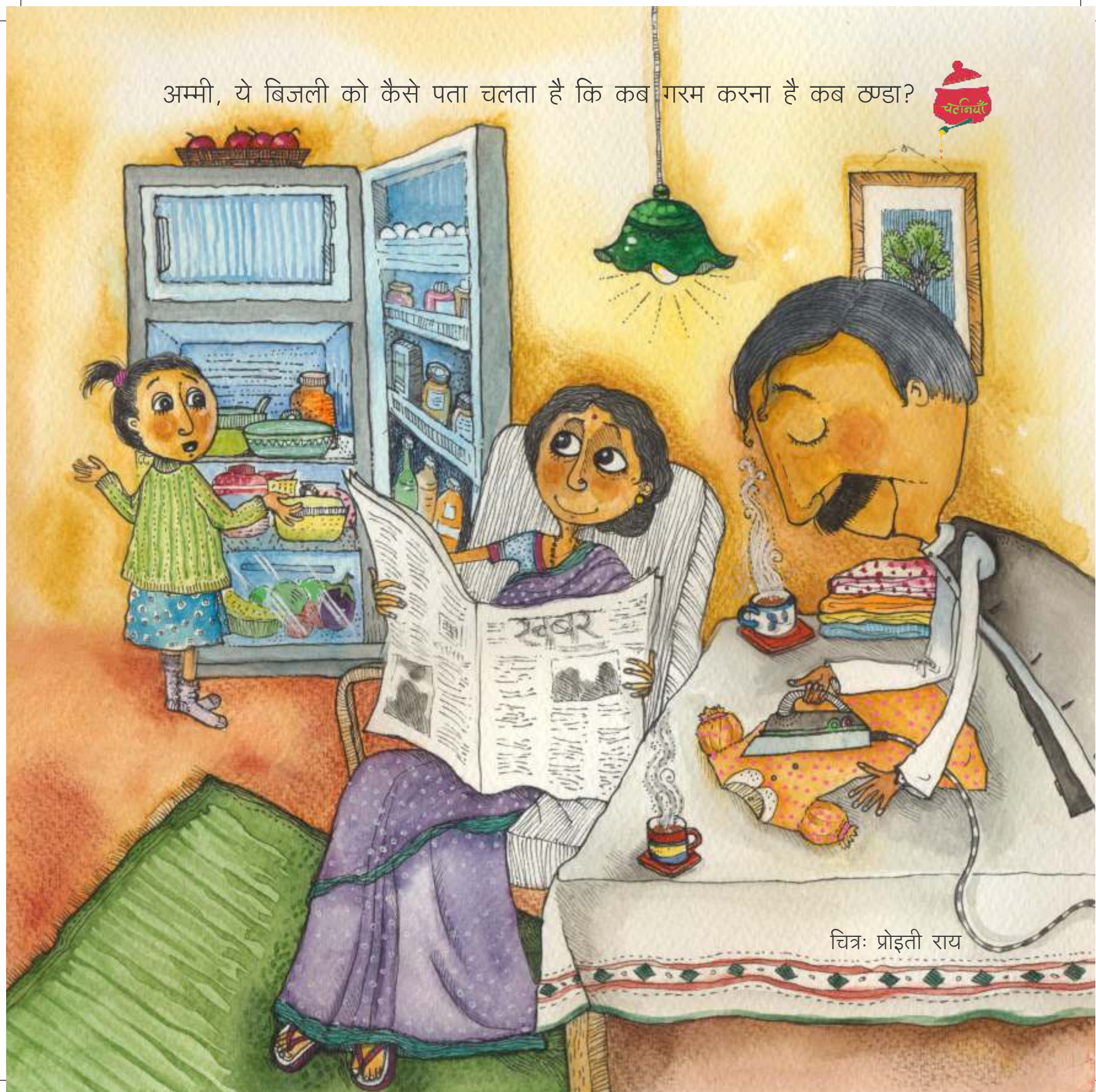
मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा  
तक्षशिला पब्लिकेशन-तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी  
की इकाई के लिए  
मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी.एस.आई.डी.सी.,  
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020  
से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी,  
नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, सम्पादक: रीमा सिंह

प्लूटो का पता:

नॉलेज सेण्टर  
सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी,  
नई दिल्ली 110024  
फोन: 011- 41555 418/428  
ई-मेल: [pluto@takshila.net](mailto:pluto@takshila.net)



अम्मी, ये बिजली को कैसे पता चलता है कि कब गरम करना है कब ठण्डा?



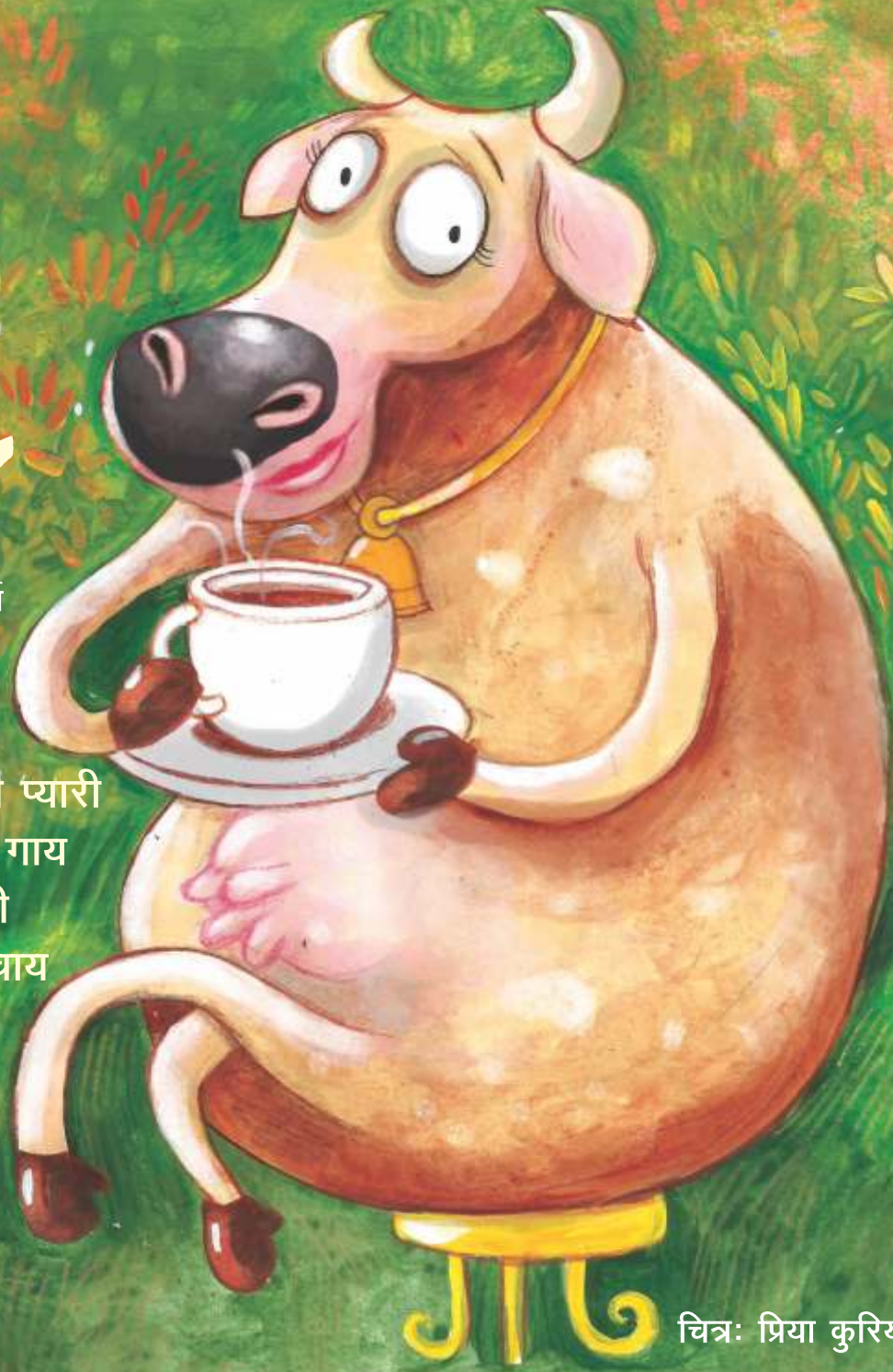
चित्र: प्रोइती राय



# चाय

शेरजंग गर्ग

कितनी भोली कितनी प्यारी  
सब पशुओं में न्यारी गाय  
सारा दूध हमें दे देती  
आओ इसे पिला दें चाय



चित्र: प्रिया कुरियन